आधुनिक चिकित्सा का विकल्प नहीं पूरक है पारंपरिक चिकित्सा

सांची यूनिवर्सिटी में जुटे पारंपरिक चिकित्सा क्षेत्र के दिग्गज विशेषज्ञ

■ समन्वित चिकित्सा कार्यशाला में जुटे देशभर के पारंपरिक चिकित्सा के दिग्गज

रायसेन। नवदुनिया न्यूज

सांची यूनिवर्सिटी में इन दिनों देशभर के पारंपरिक चिकित्सा के दिग्गज जुटे हुए हैं, जो पारंपरिक चिकित्सा के महत्व व आधुनिक चिकित्सा में उसके महत्व पर मंथन कर रहे हैं। क्वांटम एनर्जी हीलिंग, वर्मा थैरेपी, यूनानी चिकित्सा, कपिंग थैरेपी, क्रिएटिव विजुलाइजेशन, साइको न्यूरोबिक्स आदि के विशेषज्ञों ने कार्यशाला में इन चिकित्सा पद्धतियों की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। इन विशेषज्ञों ने कहा कि आधुनिक चिकित्सा पद्धति के साथ पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों का समन्वय चिकित्सा के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाएगा, बशर्ते पारंपरिक चिकित्सा को विकल्प न मानकर पूरक माना जाए। चक्र का चक्काजाम कैसे खोले, रंग से लेकर तरंग, स्पर्श से लेकर गंध, व्याधि से समाधि और इलाज से रियाज तक तमाम मुद्दों पर सांची विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित समन्वित चिकित्सा कार्यशाला में विचार हो रहा है। कार्यशाला में 30 पारंपरिक चिकित्सा और ऊर्जा आधारित चिकित्सा प्रणालियों में बीमारी की उत्पत्ति, उसे जानने के तरीकों और निवारण के दर्शन पर गहन चर्चा के साथ उनके समन्वय पर बात हो रही है। कार्यशाला का उद्देश्य सरल, सुगम, सटीक, सुलभ और संपूर्ण निरोग है जिसकी प्राप्ति के लिए सांची विवि का समन्वित चिकित्सा केंद्र कार्यरत है। कार्यशाला में पारंपरिक प्रणालियों में बीमारी की पहचान और निवारण के तरीकों तथा क्वांटम एनर्जी, कपिंग थैरेपी, ग्रेफोलॉजी, पास्ट लाइफ रिग्रेशन, साइको न्यूरोबिक्स पर भी चर्चा की गई। इस कार्यशाला में 19 जनवरी को क्रिएटिव विजुलाइजेशन की महारथी डॉ सारा चिंतनवाला, नालंदा विवि के पूर्व कुलपति और विपस्सयना ध्यान के प्रो. रविंद्र पंथ, वैदिक स्पीरिचुअल हिप्नोसिस के वेदरवि शेंगर, वैदिक अंकशास्त्र के प्रो अशोक भाटिया, ट्रांस मेडिटेशन के डॉ आशीष गांगुली, मंत्र थैरेपी की डॉ मंजू जैन समेत कई विद्वान अपनी बात रखेंगे जो पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के लिए देशभर में मशहूर है।

रायसेन। कार्यशाला में अपने विचार व्यक्त करते पारंपरिक चिकित्सा के विशेषज्ञ।

पारंपरिक चिकित्सा के विशेषज्ञों के विचार

डॉ आरएस शर्मा, कुलपति, मप्र मेडिकल यूनिवर्सिटी

अब वक्त आ गया है जब पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों को शामिल कर विभिन्न पैथियों की कमियों को दूर किया जाए। पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों पर आधारित पाठ्यक्रम और शोध पर भी ार दिया जाना चाहिए। एलोपैथी के डॉक्टर भी पारंपरिक विधियों के विशेषज्ञों की सेवाएं लेकर उपचार को प्रभावशाली बना सकते हैं।

प्रो यजेश्वर शास्त्री, कुलपति सांची विश्वविद्यालय

महात्मा बुद्ध को भवलोक वैद्य कहा जाता है जिन्होंने दुख को खत्म करने का तरीका बताया। हमारे शास्त्रों में पशुपक्षी पुराण, गजपुराण, वनस्पति पुराण जैसे ग्रंथ है जो पशुपक्षियों की बीमारियों और उनके निदान, वनस्पतियों के चिकित्सकीय उपयोग पर विस्तार से बताते है।

पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों का महत्व बताया

राजेश गुप्ता, कुलसचिव सांची विवि

द्वंद से आनंद तक पहुचने में सभी पैथियों और पद्धतियों के समन्वय की जरुरत है। हमें यह देखने की रुरत है कि बीमारी जिस तल पर शुरु हुई उसे उसी तल पर खत्म करने का तरीका विकसित किया जाए।

सुश्री रीता महाजन, विशेषज्ञ क्वांटम एनर्जी हीलिंग

हमारे डीएनए में एनर्जी के जरिए बीमारी को बहुत शुरुआती स्तर पर ही खत्म किया जा सकता है। क्वांटम एनर्जी हीलिंग में खराब स्मृतियों को हटाकर ऊर्जा का प्रवाह बढ़ाया जाता है।

डॉ टी थिरुनारायणन, विशेषज्ञ वर्मा थैरेपी

सिद्धा पद्धति प्रकृति के साथ समन्वय और खानपान के जरिए स्वास्थ्य सुधार पर काम करती है।

डॉ एस नफीस बानो, विशेषज्ञ यूनानी चिकित्सा

कपिंग थैरेपी 5 हजार साल पुरानी विधि है। यह शरीर से नकारात्मक ऊर्जा को निकालने के सिद्धांत पर काम करती है। कपिंग थैरेपी में शरीर के विभिन्न हिस्सों में वैक्यूम कप लगाए जाते हैं और वे नकारात्मक ऊर्जा को खींचकर उस स्थान पर रक्तप्रवाह बढ़ा देते है।

इंद्रप्रस्थ पृथ्विराज प्रकाशन
डाक पंजीयन मप्र/भोपा
न दबाव, न भेदभाव
राष्ट्रीय हिन्दी मेल
भोपाल, इंदौर, ग्वालियर और रायपुर से एक साथ प्रकाशित
वर्ष-21 अंक- 86 भोपाल, गुरुवार 19 जनवरी 2017 rashtriyahindimail.com पृष्ठ-12 मूल्य ₹ 2.00

30 पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों के मशहूर विद्वान शामिल हुए

वैकल्पिक नहीं, सहयोगी बने पारंपरिक चिकित्सा: कुलपति

निज संवाददाता

रायसेन, 18 जनवरी। बुधवार को सोमवार को जिला मुख्यालय के समीपस्थ ग्राम बरला में स्थित सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में 18 से 20 जनवरी को समग्र चिकित्सा कार्यशाला कार्यशाला का उद्घाटन मप्र मेडिकल यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ आरएस शर्मा किया। इस समग्र चिकित्सा कार्यशाला में देशभर से विख्यात चिकित्सक और हीलर्स शामिल हुये।

कार्यशाला में 30 पारंपरिक चिकित्सा और ऊर्जा आधारित चिकित्सा प्रणालियों में बीमारी की उत्पत्ति, उसे जानने के तरीकों और निवारण के दर्शन पर गहन चर्चा होगी। उन्होने पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों पर आधारित पाठ्यक्रम और शोध पर भी ज़ोर दिया। उन्होने कहा कि एलोपैथी के डॉक्टरों को पारंपरिक विधियों के विशेषज्ञों की सेवाएं लेना चाहिए जिससे उनके इलाज का असर बढ़ जाए। प्रो शर्मा ने समन्वित चिकित्सा केंद्र की पहल को मेडिकल यूनिवर्सिटी से पूरा सहयोग का भी वादा किया। सांची विवि के कुलपति आचार्य प्रो यजेश्वर शास्त्री ने कहा कि महात्मा बुद्ध को भवलोक वैद्य कहा जाता है जिन्होने दुख को खत्म करने का तरीका बताया। प्रो शास्त्री ने कहा कि हमारे शास्त्रों में पशुपक्षी पुराणए गजपुराणए वनस्पति पुराण जैसे ग्रंथ है जो पशुपक्षियों की बीमारियों और उनके निदानए वनस्पतियों के चिकित्सकीय उपयोग पर विस्तार से बताते है। सांची विवि के कुलसचिव राजेश गुप्ता ने द्वंद से आनंद तक पहुंचने में सभी पैथियों और पद्धतियों के समन्वय की जरुरत बताई। उन्होने कहा कि हमें ये देखने की ज़रुरत है कि बीमारी जिस तल पर शुरु हुई उसे उसी तल पर खत्म करने का तरीका विकसित किया जाए।

समन्वित चिकित्सा पर आज होगा मंथन

समन्वित चिकित्सा कार्यशाला में 19 जनवरी को ि एटिव विज़ुलाइजेशन की महारथी डॉ सारा चिंतनवाला,नालंदा विवि के पूर्व कुलपति और विपस्सयना ध्यान के प्रो.रविंद्र पंथ,वैदिक स्पीरिचुअल हिप्नोसिस के वेदरवि शेंगर, वैदिक अंकशास्त्र के प्रो अशोक भाटिया, ट्रांस मेडिटेशन के डॉ आशीष गांगुली,मंत्र थैरेपी की डॉ मंजू जैन समेत कई विद्वान अपनी बात रखेंगे जो पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के लिए देशभर में मशहूर है। कार्यशाला में 30 पारंपरिक चिकित्सा और ऊर्जा आधारित चिकित्सा प्रणालियों में बीमारी की उत्पत्तिए उसे जानने के तरीकों और निवारण के दर्शन पर गहन चर्चा के साथ उनके समन्वय पर बात हो रही है। कार्यशाला का उद्देश्य सरलए सुगमए सटीकए सुलभ और संपूर्ण निरोग है जिसकी प्राप्ति के लिए सांची विवि का समन्वित चिकित्सा केंद्र कार्यरत है। पारंपरिक प्रणालियों में बीमारी की पहचान और निवारण के तरीकों पर चर्चा,पारंपरिक प्रणालियों और पैथियों में समन्वय के बिदुंओं पर विचार, क्वांटम एनर्जी, कपिंग थैरेपी, ग्रेफोलॉजी,पास्ट लाइफरिग्रेशन, साइको न्यूरोबिक्स पर हुई बात, विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों के समन्वय पर कार्य कर रहा है,व्याधि से समाधि के समन्वय पर चिंतन किया गया।

कपिंग थैरेपी को समझाया

बुधवार को पहले सत्र में क्वांटम एनर्जी हीलिंग की सुश्री रीता महाजन ने कहा कि हमारे डीएनए में एनर्जी के जरिए बीमारी को बहुत शुरुआती स्तर पर ही खत्म किया जा सकता है।

क्वांटम एनर्जी हीलिंग में खराब स्मृतियों को हटाकर ऊर्जा का प्रवाह बढ़ाया जाता है। वर्मा थैरेपी पर डॉ टी थिरुनारायणन ने बात करते हुए कहा कि सिद्धा पद्धति में प्रकृति के साथ समन्वय और खानपान के जरिए स्वास्थ्य सुधार पर काम करती है। यूनानी चिकित्सा की विशेषज्ञ डॉ एस नफीस बानो ने कपिंग थैरेपी को समझाते हुए कहा कि यह 5 हजार साल पुरानी विधि और शरीर से नकारात्मक ऊर्जा को निकालने के सिद्धांत पर काम करती है।

कपिंग थैरेपी में शरीर के विभिन्न हिस्सों में वैक्यूम कप लगाए जाते है और वे नकारात्मक ऊर्जा को खींचकर उस स्थान पर रक्त प्रवाह बढ़ा देते है। साइको न्यूरोबिक्स के बीके चंद्रशेखर ने कैंसर से ठीक होने और ऊर्जा स्तर के संतुलन पर बात की। जुबिन विवानिया ने ग्रेफोलॉजी यानि हस्तलिपि के आधार पर बीमारियों का पता लगाने ए स्वास्थ्य में सुधार और बेहतर ऊर्जा पर बात की। डॉ.राहुल मलुस्थे और डॉ तमन्ना चेलानी ने पास्ट लाइफ रिग्रेशन के जरिए बीमारी की पुरानी जड़ो और समन्वित जीवन पर बात की।

इंटीग्रेटेड हीलिंग सेमिनार में विशेषज्ञों ने कहा

मंत्र से लेकर तंत्र तक, सब हैं चिकित्सा की पद्धतियां

• कार्यक्रम में न्यूरो साइंस सहित अन्य पद्धतियों को लाइव तरीके से बताया गया।

NATIONAL SEMINAR

सिटी रिपोर्टर • सांची विवि में चल रही 'इंटीग्रेटेड हीलिंग' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार के दूसरे दिन गुरुवार को देशभर से वरिष्ठ वक्ताओं ने विषय पर अपने विचार रखे। निमहांस, बैंगलुरू से आईं डॉ. रत्ना काकूमानू ने ध्यान के न्यूरो साइंस प्रयोगों और उनकी उपयोगिता के बारे में बताया।

उन्होंने कहा, 'ध्यान करने वालों का दिमाग ज्यादा सक्रिय पाया गया। यही वजह है कि ध्यान करने वाले लोग नकारात्मक विचारों व असफलता को वो ज्यादा बेहतर तरीके से संभाल सकते है।' स्माइल एक्सपर्ट डॉ. पंकज जैन ने कहा कि हम ठहरना भूल गए हैं, जिससे हमारा उस परमशक्ति से संवाद टूट गया है। अगर, हम अपनी आत्मा और जिंदगी में निश्चल मुस्कान को ट्राइओरिजिन स्माइल थैरेपी से पाकर फिर से सर्वशक्तिमान से संवाद कायम कर सकते हैं। मंत्र थैरेपी की डॉ. मंजू जैन ने भक्तांबर के 48 श्लोकों के सहारे कई असाध्य रोगों की चिकित्सा और उसके परिणामों को उदाहरण सहित स्पष्ट किया। वैदिक स्पीरिचुअल हिप्नोसिस के वेदरवि शेंगर ने बताया कि अपने विचारों और संवेदनाओं पर नियंत्रण के सहारे हम अपनी परिस्थिति और पर्यावरण दोनों को बदल सकते हैं। उन्होंने मंत्रोच्चार के सहारे मौलिक्यूल की गति में परिवर्तन का उदाहरण भी दिया।

इंद्रप्रस्थ पृथ्विजय प्रकाशन
डाक पंजीयन मप्र/भोप
न दबाव, न भेदभाव
राष्ट्रीय हिन्दी मेल
भोपाल, इंदौर, ग्वालियर और रायपुर से एक साथ प्रकाशित
वर्ष-21 अंक- 85 भोपाल, शुक्रवार, 20 जनवरी 2017 rashtriyahindimail.com पृष्ठ-12 मूल्य ₹ 2.00

मंत्र से लेकर तंत्र, संगीत से लेकर ट्रांस चिकित्सा के समन्वय का प्रयास

पारंपरिक प्रणालियों में बीमारी की पहचान और निवारण पर हुई चर्चा

निज संवाददाता

रायसेन, 19 जनवरी। सांची बौद्ध.भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय चाल रही समन्वित चिकित्सा कार्यशाला में विपस्सना भगवान बुद्ध का बताया वो उपहार है जिसके भरोसे मनुष्य अपने दुखों का अंत कर सकता है। नव नालंदा विहार विवि के पूर्व कुलपति और विपस्सना के विद्वान प्रो रविन्द्र पंथ ने कुछ इसी अंदाज में अपनी बात रखी सांची विवि में चल रही समन्वित चिकित्सा कार्यशाला के दूसरे दिन। उन्होने कहा कि विपस्सना से ना सिर्फ दिमाग पर काबू होता है बल्कि हमारी बुद्धि और मान्य धर्म भी स्थापित होता है।

उन्होने कहा कि शरीर की प्रतिक्रियाओं को समझकर उनका बुद्धिमतापूर्ण ढंग से इस्तेमाल कर पाना ही इस थैरेपी की खासियत है। निमहांस बैंगलुरू से आई डॉ रत्ना काकूमानू ने बताया कि ध्यान करने वालों का दिमाग ज्यादा सक्रिय पाया गया और नकारात्मक विचारों और असफलता को वो ज्यादा बेहतर तरीके से संभाल सकते है। स्माइल थैरेपी के डॉ पंकज जैन ने बताया कि सभी जगह पांच अवस्थाएं होती है जिसमें सिकुड़ना,ठहरना, फैलना और फिर स्थिर होना शामिल है। लेकिन पांचवी चीज है जो सबकुछ नियमित, नियंत्रित और संचालित करती है। अगर हम अपनी स्माइल थैरेपी से पाकर फिर से सर्वशक्तिमान से संवाद कायम कर सकते है।

समन्वित चिकित्सा कार्यशाला में 20 जनवरी को तिब्बती चिकित्सा पद्धति लामा फेरा, कला आधारित थैरेपी,गंध चिकित्सा,संगीत चिकित्सा,रंग एवं अंक चिकित्सा,हिप्नोथैरेपी और वैदिक अंकशास्त्र के विद्वान अपने विचार रखेंगे। कार्यशाला में 30 पारंपरिक चिकित्सा और ऊर्जा आधारित चिकित्सा प्रणालियों में बीमारी की उत्पत्तिए उसे जानने के तरीकों और निवारण के दर्शन पर गहन चर्चा के साथ उनके समन्वय पर बात हो रही है। कार्यशाला का उद्देश्य सरल, सुगम, सटीक,सुलभ और संपूर्ण निरोग है जिसकी प्राप्ति के लिए सांची विवि का समन्वित चिकित्सा केंद्र कार्यरत है।

विभिन्न चिकित्सा प्रणालियों के समन्वय पर चिकित्सा कार्यशाला।

तीन दिवसीय समन्वित चिकित्सा कार्यशाला का शुक्रवार को हुआ समापन

संपूर्ण इलाज के लिए परंपरागत चिकित्सा पद्धति का लेंगे सहारा

रायसेन। सांची विवि के समापन सत्र में शामिल श्रोता।

रायसेन। राष्ट्रीय समन्वित चिकित्सा कार्यशाला को संबोधित करते विवि के कुलसचिव राजेश गुप्ता।

रायसेन। नवदुनिया न्यूज

पारंपरिक चिकित्सा की हर विधा की अपनी खूबियां हैं और कुछ खामियां हैं। जिनके आपसी समन्वय से ही संपूर्णता प्राप्त की जा सकती है। सांची विश्व विद्यालय में तीन दिन तक चले मंथन के बाद विभिन्न विधाओं के दिग्गज एक संपूर्ण चिकित्सा प्रणाली के लिए विभिन्न विधाओं की खूबियों को एक-दूसरे में समाविष्ट कर पूर्णता के लिए तैयार नजर आए।सांची विश्वविद्यालय में आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय समन्वित चिकित्सा कार्यशाला में करीब 30 पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों में बीमारी को समझने के सिद्धांतों और संकेतों के साथ इलाज के दर्शन और विधियों पर चर्चा हुई। विभिन्न हीलिंग पद्धतियों में समन्वय के साथ एक दूसरे की पद्धतियों को समझने और मिलकर काम करने के विश्वास के साथ सांची विवि में समन्वित चिकित्सा कार्यशाला का समापन हुआ। तीन दिन तक विभिन्न पारंपरिक चिकित्सा के विशेषज्ञों ने अपनी प्रणाली की खूबियों को समाविष्ट और कमजोरियों को दूसरी विधा से परिपूरित करने को तत्पर दिखे।

सांची विवि से शुरू हुई समन्वय की यात्रा

तीन दिन चले मंथन के बाद पारंपरिक चिकित्सा के समन्वय पर सभी सहमति तो नजर आए, इस दौरान सवाल ये भी उठे कि क्या कोई ऐसा समुद्र है जहां सभी विधियां मिलती हैं। समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए विवि के कुलसचिव राजेश गुप्ता ने कहा कि खुद से खुदा तक पहुंचने की राह में खोदना पड़ेगा और खाद देना पड़ेगी और ऐसा नहीं हो पाया तो खेत ही रह जाएगा। उन्होंने कहा कि हमें एक गंभीर यात्रा की शुरुआत की है और ताकत के साथ अपनी कमजोरियों पर भी विचार की जरुरत है ताकि जुड़ाव के बिंदु मिल सके। उन्होंने निर्माण से निर्वाण की यात्रा में बहुत सावधान रहने की भी जरुरत बताई। कार्यशाला के संयोजक डॉ अखिलेश सिंह ने तीन दिन की गतिविधियों का सार प्रस्तुत किया। विवि के डीन डॉ नवीन कुमार मेहता ने सभी का आभार व्यक्तकिया।

नजरिया बदलने की जरूरत

शुक्रवार को चक्र एवं ऑरा थैरेपी में विभिन्न चक्रों में ऊर्जा का समन्वय स्थापित कर बीमारी दूर करने की बात हुई। डॉ रीता महाजन ने बताया कि डीएनए एक्टीवेशन और नजरिया बदलकर नजारे बदले जा सकते हैं। लामा फेरा में महर्षि शात्विक द्वारा कीलित किए गए साढ़े चार लाख मंत्रों को खोलने वाले सदगुरू सत्यानंद की इस थैरेपी में 12 संकेतों के जरिए असाध्य रोगों के इलाज पर काम किया जाता है। डॉ गणेश दुबे ने बताया कि खुद को बदलने पर काम करना और मूल ऊर्जा को बढ़ाना ही सबसे बड़ा काम है।

तीन दिन के मंथन का सार ...

- खुद को समझने और अपने उद्देश्य को तय करने वाली पद्धति विपस्सना पर बात हुई, जिसमें शरीर की प्रतिक्रियाओं को समझकर उनका बुद्धिमतापूर्ण ढंग से इस्तेमाल करना सीखा जा सकता है।
- स्माइल थैरेपी में सिकुड़ने, ठहरने, फैलने और फिर स्थिर होने के साथ सबकुछ नियमित, नियंत्रित और संचालित करने वाली शक्तिके साथ संतुलन बैठाकर परमशक्ति से संवाद और बुद्ध जैसी निश्चल मुस्कान को ट्राइओरिजिन स्माइल थैरेपी से पाने की बात हुई।
- वैदिक ज्योतिष में अंदरुनी कुंठा को छोड़ और ग्रह योग, राशि और स्थान के ज्यामितिय आंकलन के सहारे रोगी की प्रकृति और उपचार से बेहतर नतीजे प्राप्त करने को समझाया गया।
- क्रिएटिव विजुलाइजेशन में विचारों की शक्तिऔर उसके सहारे विचार और संवेदना को जागृत कर कुछ भी पा सकने की बात हुई।
- मंत्र थैरेपी में भक्तांबर के 48 श्लोकों के सहारे कई असाध्य रोगों की चिकित्सा और ठीक होने के उदाहरण प्रस्तुत किए गए।
- वैदिक स्पीरिचुअल हिप्नोसिस में विचारों और संवेदनाओं पर नियंत्रण के सहारे परिस्थति और पर्यावरण दोनों को बदलने को समझाया गया।
- ट्रांस मेडिटेशन के सहारे अद्भुत परिणाम पाने का प्रदर्शन किया गया। संगीत चिकित्सा के जरिए दिमाग और शरीर को व्याधि मुक्त करने का प्रस्तुतिकरण दिया गया।
- इलेक्ट्रो होमियोपैथी में पेड़ पौधों से प्राप्त दवाइयों के जरिए असाध्य बीमारियों के सफल इलाज का प्रदर्शन किया गया।
- क्वांटम एनर्जी हीलिंग में खराब स्मृतियों को हटाकर ऊर्जा का प्रवाह बढ़ाकर शुरुआती स्तर पर डीएनए में बीमारी को खत्म करने की बात हुई।
- कपिंग थैरेपी में शरीर के विभिन्न हिस्सों में वैक्यूम कप लगाकर नकारात्मक ऊर्जा को खींचकर उस स्थान पर रक्त प्रवाह बढ़ाने की बात हुई।
- साइको न्यूरोबिक्स में कैंसर से ठीक होने और ऊर्जा स्तर के संतुलन पर चर्चा हुई।
- ग्रैफोलॉजी यानि हस्तलिपि के आधार पर बीमारियों का पता लगाने, स्वास्थ्य में सुधार और बेहतर ऊर्जा का प्रस्तुतिकरण हुआ।
- पास्ट लाइफ रिग्रेशन और इनर चाइल्ड वर्क के सहारे बीमारी की जड़ों की खोज पुराने जीवन में करने और उन्हे हील कर मौजूदा मुश्किलों को खत्म करने की बात की गई।

गहरे बैठी ग्रंथि को खत्म करने में कारगर है कला

कला आधारित चिकित्सा के डॉ आदित्य तिवारी ने संतुलन में रहने, जागरुक रहने और खेल-खेल में गहरे बैठ चुकी किसी ग्रंथि को खत्म करने की पद्धति समझाई। संगीत चिकित्सा में राग, ताल और स्वर के सहारे कई तरह के अवसाद और बीमारियों के इलाज पर बात हुई। हिप्नोसिस में पुरानी स्मृतियों को हटाने और ऊर्जा संचालन पर बात हुई। इस पद्धति में मुंबई से आई डॉ ज्योतिका छिब्बर ने सपनों के जरिए बीमारी का पता लगाने और उसके इलाज पर भी प्रकाश डाला।